

DPN 5469

Title : दमनारोहण विधि / DAMANĀROHANA VIDHI

Run. No. 6160

Cat. No. 215

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नन नन दमनारोहण विधि (९)

Size in cms. 21 x 11

Folios 16

Lines (in a page) 8/9

newa direction partly

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१॥ नायदम नरोप्य ३॥ ईशाने ॥ २॥ ॥ ऐं प ल हं ३॥ सौ वृक्ष
कुवेरायदम नरोप्य ३॥ उतरे ॥ ३॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
यमायदम नरोप्य ३॥ दक्षिणे ॥ ४॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
चदम नरोप्य ३॥ पूर्वे ॥ ५॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
म नरोप्य ३॥ पश्चिमे ॥ ६॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
म नरोप्य ३॥ आग्नेये ॥ ७॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
यदम नरोप्य ३॥ वायुवे ॥ ८॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
॥ १॥ ये हं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
पुष्यमयेरोप्य ३॥ जलददेन ॥ १॥ ॥ ऐं ३॥ स हं ३॥ सौ वृक्ष
अमृतजलाये २॥ श्रीसम्बता ॥ चन्दनसि

ताकां अर्प्य ॥ नमो दमनपूजनं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं दनुजे ॥ असदाय
नमः ॥ ऐं ३ वां वसंताय ॥ ऐं ३ प्रीत्यै ॥ ऐं ३ हृदये ॥ ऐं ३
श्रीदमनरोष्य ॥ ॥ ऐं ३ कां कां कुं कुं कौ कः कः श्रीक
मदेवाय ॥ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३
पूये वौषः पूं प्रीत्यै ॥ ऐं ३ वां वौ वौ वौ वौ वौ वौ वौ वौ
ताय ॥ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३ ऐं ३
॥ अद्यो ॥ वज्र ॥ वतिशिवय ॥ हृदयादि ॥ ऐं पुन मोभ
गवतीहृक्मलायै ह्रीं श्रीं ऊर्ध्वं वक्राय ॥ स्त्रीं कृत्तिका
॥ ऐं ३ वक्राय ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वरशिखाय ह्रीं दक्षिण
॥ अद्यो ॥ अद्यो ॥ मुखीव हृदयायै ह्रीं उतोरव

क्राय ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं महं तारिकायै ह्रीं श्रीं पश्चिमवक्राय
॥ ३ ॥ विरारि विद्ये को ह्रीं रायै ह्रीं ॥ रायवक्राय ॥
॥ ॥ अथ वादसांगः ॥ ह्रीं सिद्धये पादद्वये ॥ ह्रीं
वायै ना नुद्वये ॥ ह्रीं विपुताये ३ हृदये ॥ ह्रीं ल
द्वये गृह्ये ॥ ह्रीं दायै ना भौ ॥ ह्रीं माहिने हृदये ॥ ह्रीं
शिवायै करे ३ ॥ ह्रीं वाममुखायै मुखे ३ ॥ ह्रीं नाशाय
मायै नासायुद्धये ॥ ह्रीं कर्तुकायै कर्णद्वये ॥ ह्रीं
हरिकेशये ॥ ह्रीं मुखमुखशिरसे ॥ ॥ ॥
ह्रीं सर्वजाताय हृदये ॥ ह्रीं अमृततेजोपादि

स्ते ॥ स्तुतुवेदवेदनीयनादिवो धशिखायवौषट् ॥ स्ते
 वज्रिणीवज्रधरायसुमंतकवचार्ह ॥ स्ते नोम्बो नित्यं
 लुपशक्तिसहस्राने जायिते नेत्रेयायवौषट् ॥ स्तुतु
 मःस्तुभ्यं न तशक्तिनीहंमहपाश्रुपतास्त्रायसह
 स्त्रोक्षायस्त्रोयहंफट् ॥ कुत्रिणायत्री ॥ ॥ दमन
 गायत्री ॥ अनेगायविश्वे कामदेवाय धीमधीतमोतनो
 दमनप्रबोदयात् ॥ स्वप्नवारजपेत् ॥ ॥ पूजनं ॥ स्ते ५ अ
 नुवनिशिवय ॥ वसि ॥ आवासेधेनु ॥ ॥ धूपदीप
 नेमिमुद्रा ॥ जय ॥ स्ते ५ कृत्वा स्वाहा ॥ १० ॥ स्तोत्र ॥ श्रीस

न्यत्रा ॥ दमनाचत्रादिपाथादिवसेतेपायनाशने ॥ मण्डलं
 पूर्वकृत्वा लाक्षागेनमहोत्सदा ॥ जगनाथमहेशानिपरम
 त्मारितेषुभो ॥ करेमिदंमनं पूजाहायनेपरिपूरितं ॥ त्रैवि
 र्वैकहृदयमतिमंनिर्जुभावंमम ॥ नलोपायसमच्छ
 घोएनिमिदनाथपुशंनोभवे ॥ संसारेभयभीतभावविक
 लानातत्त्वमेकविदुः ॥ पूजेहायनकर्मद्विदसफलंदास्य
 यंकर्मणा ॥ अत्रगथादि ॥ ॥ प्रतिष्ठा ॥ कदम्बप्रस्रसंजा
 तं कामकामागसंभव ॥ दमनं वक्षरूपं च लुपतिष्ठासुमेस
 दा ॥ इति दमनपूजा ॥ दमनपात्रसंज्ञेन

वमानसेनकलशोपरिष्ठापयेत् ॥ हृदय ॥ षडंग ॥
आवाहयेत्तुमुद्रा ॥ ॥ गंधर्वद्वयसहस्रमनम्रविवाह
नैपुण्येनस्वस्वमंत्रेण ॥ वाक् ॥ अथैवराहदेशकोलेसंकीर्त्य ॥
॥ ऐं पञ्चाम्रितोसिकौलेशकोलेशपासहभैरवं ॥ गृह्णतुदेवदेवेश
दमनैल्लिहुरितामम ॥ वदुक्षेजसमायुक्तमुपदेशसमन्वितं ॥ न
वैषोडशलिङ्गाचगुर्वीजवचनं ॥ अथाम्रितामयाभक्त्याम
नोवांछितवाचिके ॥ विद्यापीठसमस्तहितथावेखेवरीगणा ॥
समस्तकुलदेवीनां कुलेऽवसमन्वितं ॥ अथाम्रितामयासर्वदम
नैदोषसागरतः ॥ ऐं पञ्चाम्रितोदेवेशश्रीकृष्णसमन्वि
तयोगयुतंयोगवृक्षसमन्वितम् ॥ वत्सलानामयादे

वीसिद्धिजमेकतमया ॥ भोगाशक्त्यानिर्विन्ताकृपाणितावले
वयामि ॥ प्रायश्चित्तवधुर्दक्षमताम्यमेऽवरा ॥ पुलिंदुर्ग
धर्मेननजालंतावदुर्ग ॥ ॥ ऐं पञ्चैलाशपीठमव्यक्तं
कारिणानेनविग्रहं ॥ वतुः पीठसमायुक्तंयोगिनीविद्धिम
युतं ॥ ॥ अथाम्रितोसिकौलेसमेत ॥ ॥ श्रीकौलीशनाथ
देवश्रीकृष्णकाष्ठाश्रीपादुकां पूजयामिनमः ॥ ॥ वाक्
॥ मार्तराष्ट्रनिर्वाणत्यं पूजाक्रमेणाय ॥ ॥ अथाम्रवि
वाहनंजयेत् ॥ षडंग ॥ वतिशिरयं ॥ नमात्मा ॥ प्रलमनं ॥ कुला
यत्री ॥ ॥ अथगायविग्रहेकामदेवायधीमहितेनोदमनपूजा
दयात ॥ ॥ अथवह्मणो ॥ वाक् ॥ नवात्मासंनेराशि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ त्वा क म हा व ति ॥ ध्रु० दी० ने० ॥ जे प ॥
लोत्र ॥ नित्य याजु को तर्पण ॥ अक्ष विंशति ॥ इत्यधिवासन
विधिः ॥ ॥ ततो दसनारोहणं ॥ गुरुनमस्कारादि न्यासा
र्चभूतश्रद्धा आत्म पूजा ॥ ॥ कलशोपरिस्थीत दसनया
र्थना ॥ प्रार्थने दसनारोहणं भवतो जातश्वपुष्पोत्तम ॥ वृत्ता
रपाद्यामश्नीशं योजयित्वा पूजाविधानेन ॥ दीक्षाकारण
भक्तिभक्त्युत्पत्तिं शिष्यो गुरुवर्द्धते ॥ चैत्रे चैव विधाने रोह
णसुरैः सशैवतजादरात् ॥ अथिवासनादिनामेव च यज्ञे
नेहा दामते ॥ पंचोपहारो वाच्यः सप्तैत्रे मासके ॥
आफसदमनोवाचितकारणं ॥ नश्च वृत्तागति

र्द्धयदमनो नात्र उच्यते ॥ तिनदसनसंज्ञावमंत्राणां तु यते सदा
॥ दुःखसौं कजरामृतुभयपातकमोचनं ॥ तस्माद्यैत्रविधाना
नियावत्कृते निर्वहे ॥ महापातकनश्यति रोगो दीर्घमायुषं ॥
अत्राग्यादि ॥ ॥ ततोः दसनचुस्त्रेण विसर्जनं ॥ ॥
दसनद्वेदनमंत्रः ॥ ऐं प ह्रीं स ह्रीं श्रीं दसनकर्त्रेण मिहूफुट
॥ स्तेत्रमेन दसनकर्त्रेण पूर्वोक्तिमंत्रेण ॥ ॥ जेयेत् ॥ वडंग ॥
॥ दसनगायत्री ॥ आवा ह्यधे नु ॥ गंधवदनसधुनवपिव
ने द्विस्तेष्वहोमं दुवने पूजाक्रमेन द्वास्ते ह्ये ॥ अथेवराह ॥
कैलाशपीठमधेति ॥ वाको ॥ पूजाक्रमेण स्वस्वमंत्रेण अर्घ्य
येत् ॥ त्रिवीरात्वं ॥ हार ॥ गवाक्षा ॥ डमरु ॥ धीराव ॥

ॐ नमो गुरुवे ॥ ॥ अथ गुरुमण्डलाचरणम् ॥
 आवम ३ ॥ सूर्याय ॥ अथापुत्रं गोमासं मीनं गोप्रदा
 दक्षाकर्मणो गुरुमण्डलाचरानि मित्यथ कुलमार्तं ए
 नैरवाय अर्धनेत्रः ॥ पुष्प ॥ गुरुपूजा ॥ ॐ गुरुवे ॥
 पुष्प २ ॥ तुतीचायके ॥ पादाक्षः हस्ताक्षः पुत्राय ॥
 चन्दनः यज्ञोपवीतकः पुष्पः वस्त्रः पदियः ॥ अत्रगदा ॥ दि
 ॥ ॥ गन्धोदकेन लिखन ॥ ॐ मधुकेन मधेन ॥ म
 ना निवस्ये ॥ तद्विषयमनाथाय लिखया मित्राय

वारिणा ॥ ॥ वारिणे ॥ ॐ सोऽधिना पृथिवी चैव
 गं ववारिणेत्येता ॥ पूर्वजन्मकृतं पापं दूष्टं
 सुकृतं मया ॥ इह जन्माकृतं पापं दूष्टं हि जन्म
 हेषु च ॥ करद्वयं जह्नु कृत्वा प्राप्तिं ये चरेत स
 ॥ अखण्डमण्डलोद्विग्नहृत्स्यो गेहि मित्रया ॥ पुष्प
 च विविधाकारजायते विविधे कुले ॥ तत्त्वविक्ष
 म्पत्ता नाथं ह्यं तु शिष्यवेदा ॥ ॥ पोतामूनमण्डल
 वोये ॥ केवोतये ॥ चन्दनं हि उरु अक्षतजो नास्यान

ॐ अक्षयः मेरुः का कर्पूरा प्रयेन च एवरे ॥ तस्य
 ददुःखिभिरुचैरुचैः श्रीगुरुवत्तमः ॥ अनादिज
 मास्यप्रापुर्वेन विदुः ॥ ज्ञानानेवस्य
 सिद्धिर्नैव ॥ पुनराप्याप्त ॥ दुर्दैवरेति यो
 ददुःखिभिरुचैः श्रीगुरुवत्तमः ॥ अक्षयः मेरुः का कर्पूरा प्रयेन च एवरे ॥ तस्य
 ददुःखिभिरुचैः श्रीगुरुवत्तमः ॥ अनादिज
 मास्यप्रापुर्वेन विदुः ॥ ज्ञानानेवस्य
 सिद्धिर्नैव ॥ पुनराप्याप्त ॥ दुर्दैवरेति यो

कस्यैव न सदा वा गो गुरुभा भिन्नवत्तमः ॥ तस्य
 प्राप्तामथ विलसन्तु भ्यो निवेदयितुं ॥ गुरुदेवो म
 हादेवो गुरुदेवो महेश्वरः ॥ गुरुदेवो विष्णुः सर्व
 देवो स योगुरु ॥ पुनराप्याप्त ॥ दुर्दैवरेति यो
 ददुःखिभिरुचैः श्रीगुरुवत्तमः ॥ अक्षयः मेरुः का कर्पूरा प्रयेन च एवरे ॥ तस्य
 ददुःखिभिरुचैः श्रीगुरुवत्तमः ॥ अनादिज
 मास्यप्रापुर्वेन विदुः ॥ ज्ञानानेवस्य
 सिद्धिर्नैव ॥ पुनराप्याप्त ॥ दुर्दैवरेति यो

01

02

निष्ठुद्विरुत्तमा विहो क्यदिति येन तस्मै ॥
 उरुवेनमः ॥ गुरुवलेति ॥ अत्र गद्यादि ॥ ॥
 पुनस्तुति ॥ संसारप्रयोजनेन तासं नत्वस्याग
 ते ॥ दुखसो दुःखशक्तो मि जन्मपृत्त्युद्योजादिकं ॥
 कर्मणामनसा वा या मया त्मा विनिवोदितं ॥ अ
 नुगृह्णुमं हि दुःखं केचित् ॥ न नाश्रियां आ
 जातं हि पुष्पा लस्य त्पुमान्मात्रं यो यदि यत्र यदि
 गुरुमं जो मु मुखी ध्वजान् नमः ॥ विनिवृत्तं नुपासा
 ३

[illegible]

त्योति सर्वभूतातां स्थित्यं स चरे ॥ अत्र वारेण भूता
सुः ॥ ५ ॥ त्वय र सधुरः ॥ कर्मण्यममवा वा नतो याया
रुते ममः ॥ अकृतवत्पुत्रे न पुत्रे ॥ ६ ॥ मंज
हो ॥ कया हीन भक्ति र्ना तं थै व च ॥ जय हो मा च न ही
ने च मे ता पर मे वर ॥ ७ ॥ पुन सुति ॥ अनादि धी र
संसार व्याधि दोष कल तव ॥ नमः श्रीनाथ देवाय आ
मो घ्नो मोष विनो नः ॥ ८ ॥ अरे ति यो दीप्ता न प
कृत्वा मले वयं ॥ अकथं जानये व स नमो आगुत
वे नमः ॥ ९ ॥ ज्ञान शक्ति समा रूपा तत्त्व माहा विभू धितः

य
भूति मुक्ति युदा तारं गुरु के सदा शिवं ॥ आजाय साय क
रु मत्सि द्वा ह त्वत्पु सा दत ॥ नाना सु सग न कृत्या आरी
बन्दि दानु मे ॥ अस्व रु मण ला का र द्यो तय त्र न
भच्छा हि ॥ अच र त्व ह मा ह्वा तं अ कल व्य व स्थिता ॥
ल वृ षा द क्षि णा ट त्वा ॥ मण्ड हा लु ति ॥ ३ ॥ मण्ड ना ख
त्र म सु भ्यं सर्वे तं त्या धि मा व य ॥ भू भु वः स्वः स्व
रू पा य वि व रु पा य तं नमः ॥ क्रि यो नो मु न क
तं वी भ म का य वे ति दु ये ॥ शंभु नो गुरु वे दे व

[illegible]

अथ मंत्रदान विधिः ॥ शिष्या मन्त्रं जप्त्वा तत्त्वं
कृत्वा ॥ गुरुन आगमसंविद्ये मन्त्राया ये जपन्ते तेन ॥ गुरु
पि ह्यनया वक्ता इवाव्यजो जगत्शिष्यास्तान् च यो ॥ क
सिक्कसंनये ॥ नृवंशनी चिह्नं पट्टं कर्त्तुं माते च यत्ति
भवति विद्ये ॥ अथोक्तं ॥ अथ नान्यत्तु च यत्ति विद्ये ॥
मन्त्रा फलानां इवात्मनो न नत्वाये ॥ मन्त्रं ॥ इत्येव ॥ २ ॥ शिष्या
ये स्वाहा ॥ मूर्द्धि हृदि नमि ॥ ऐं ह्रीं आत्मतत्त्वा यद्वाहा ॥ ऐं
ह्रीं विद्यां तत्त्वा यद्वाहा ॥ ऐं ह्रीं शिवतत्त्वा यद्वाहा ॥ चत्स
यो ह्यस्य वाहसं पुत्रीत्या ॥ ॥ शिष्या या ता हाती मन्त्रात्
न नये ॥ वत्तं लिख्यते ॥ अथ नान्यत्तु च यत्ति विद्ये ॥

जति॥ षडंग॥ ५॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 ये॥ हे शिष्याः॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 ने॥ सोः॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 र्ण॥ ॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 लयः इति न विचार्य शेषं यत्॥ ॥ षडंगं षडंगं पुनरव-
 पद्योति न्यषट्पदं॥ षडंगं पुनरवपद्योति न्यषट्पदं
 यकोऽतिवृत्तः॥ ॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 मध्ये॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह
 ने॥ अस्मिन्नेव न शिष्याया कया ह्यस्य विदुः न ह

॥ २॥ ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥

छये विद्या त वाधिकारे पाद दयो पा ॥ पाद दयो ॥ ३२ ॥
 तत्क विद्या रिह न दयो ॥ ३३ ॥ सधन त वाधि ॥
 रेव ह्यस्थामि पा ॥ ३४ ॥ त्रितुल्ये न वा ॥ ३५ ॥ येन ॥
 पुन ह्यम विनो न शो ॥ ३६ ॥ इत्येतेन यो धिकारे ॥
 मस्थाने पा ॥ ३७ ॥ इत्यादि ॥ ३८ ॥ अथानुक्रमेण न ह्यम विनो ॥
 वयेन ॥ ३९ ॥ अथानुक्रमेण न ह्यम विनो ॥
 मिमु डां द र चिह्न ॥ ४० ॥ चिह्न ॥ ४१ ॥ दि सगे न शी की द ॥ ४२ ॥ शी की द ॥ ४३ ॥ ति पु
 ति क ॥ ४४ ॥ तय ये ह ॥ ४५ ॥ पुतो स्थ तो ॥ ४६ ॥ आ र तो पि षा ल ॥
 म ये ये ॥ ४७ ॥ सि ष्ठ या ल ही ती ल यो ॥ ४८ ॥ अक्ष त ॥

ध्याया न पा ल य त वे ॥ ४९ ॥ त्रु गा ल य त वे ॥ ५० ॥ त्रु वा ष्ठु धि य
 पा फ ये वे ॥ ५१ ॥ अकृत य न व र्त्त क ॥ ५२ ॥ त्रु वा ष्ठु धि य
 क र्त्त क ॥ ५३ ॥ अकृत य न व र्त्त क ॥ ५४ ॥ त्रु वा ष्ठु धि य
 मे व त्रु वा ष्ठु धि य ॥ ५५ ॥ त्रु वा ष्ठु धि य ॥ ५६ ॥ त्रु वा ष्ठु धि य
 बु ज ॥ ५७ ॥ २ ॥ गो प ना ड व ने ॥ ५८ ॥ गो प ना ड व ने ॥ ५९ ॥ गो
 प ना ड व ने ॥ ६० ॥ गो प ना ड व ने ॥ ६१ ॥ गो प ना ड व ने ॥ ६२ ॥ गो
 पा फ ये वे ॥ ६३ ॥ गो प ना ड व ने ॥ ६४ ॥ गो प ना ड व ने ॥ ६५ ॥ गो
 अ नु कृत य न व र्त्त क ॥ ६६ ॥ अ नु कृत य न व र्त्त क ॥ ६७ ॥ अ नु कृत य न व र्त्त क ॥

मानकं विद्यां हि यद्येव जपसा न ॥ गोये दक्षि
 माहाय ॥ अगो धादि ॥ शिष्य य ॥ मग्निते त्यमा
 चेवे ॥ समये धादे ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 प्रीतिप्रेता ॥ समये धादे ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 य ॥ आचार्य कृति ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 ज्येष्ठगते ॥ स्वामि स्वामि स्वामि ॥ तयि ॥
 दिधामे ॥ धेमा सुति ॥ अं आवाह ॥ नजामे ॥ तयि ॥
 मो ज्य ॥ ॥ इति लिख्य शेषे नमः प्रपन्न वि वि

गायत्री ॥ इत पुस्तक म विद्या म स देवा य वीम
 शित नो र द्रु प्रवी ॥ ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 स्वाहा ॥ ॥ तयि ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 ध्या ॥ स्वाहा ॥ त्रिदेव या ॥ स्वाहा ॥ स्वाहा ॥
 ज्ञां स्वाहा ॥ तयि ॥ मग्निते त्यमा ॥ तयि ॥
 ॥ इति मंत्र प्र

२९५
दमना रोहतासि

0

CMS

5

10

15

20

5

10